समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 2019–20 पृष्ठः– 4 अंक :– 44 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

जे.एन.यू. उन्मादी तत्वों का गढ़- डॉ. किशन कछवाहा

अत्यन्त आश्चर्य एवं दुःख का विषय है कि अपने ही देश के अपने ही लोग जाने– अनजाने में सहज–भोलेभाले बनकर भारत की बर्बादी देश के टुकड़े–टुकड़े, कश्मीर की आजादी और आतंकी अफजल गुरू की फाँसी का बदला लेने वाले जैसे नारे लगते हैं और देश के बुद्धिजीवी इन राष्ट्रद्रोही गतिविधियों का विरोध करने के बजाय अंध समर्थन करने जुट जाते हैं। ऐसे समर्थन से शिक्षा केन्द्रों को ये अलगाववादी और नक्सली प्रवृत्ति के लोग अपना अड्डा बना लेते हैं। जे.एन.यू. में तो कश्मीर के आतंकी और अलगाववादी लम्बे समय से जमे हुये हैं। यह तथ्य अब तक उजागर हो चुका है। ये तत्व यहां से देशघाती नक्सलवाद, अलगाववाद तथा हिंसा का प्रचार करने के लिये प्रवेश लेते हैं। यह तथ्य भी सामने आ चुका है कि पूर्व में ऐसे तत्वों को योजनापूर्वक एवं षड़यंत्र पूर्वक भर्त्ती कराया गया था। कुछ को बाद में इसी अपराध में बन्दी भी बनाया गया था। डी.एस.यू.(संगठन) ऐसे ही छात्रों का गिरोह है, जो भारत की बर्बादी के नारे लगाने वालों के गिरोह से जुड़े रहे हैं।

भारत तेरे टुकड़े होंगे– इंशा अल्लाह, इंशा अल्लाह, अफजल गुरू हम शर्मिन्दा हैं–तेरे कातिल जिन्दा हैं, आजादी–आजादी–कश्मीर की लेंगे आजादी, भारत की बरबादी तक जंग करेंगे आदि–आदि राष्ट्र विरोधी नारे लगते रहे हैं। तब भी सेकुलरवादी समाचार पत्रों, दूरदर्शन चैनलों ने ऐसे राष्ट्रद्रोहियों का समर्थन ही किया था।

जे.एन.यू. केम्पस में वहां की कथित बौद्धिक उर्वरता से यदि छात्र भारत के सोलह टुकड़े की मानसिकता और वैचारिकता पा रहे हैं, तो देश को और विशेष रूप से देश के बुद्धिजीवियों को सचेत हो जाना चाहिये कि यह भयावह मामला है। इनकी बरगलाने, तथ्यों को झूठा सिद्ध करने और लोगों को भड़काने की क्षमता कई प्रकार की आशंकाओं को जन्म देने वाली है।

मामला भारत राष्ट्र की एकता आजादी अखंडता और उसकी व्यवस्था को चुनौती देने वाला है। विश्व में कहीं भी ऐसी आजादी नहीं है, जिस राष्ट्र–राज्य में निवास करें उसके सोलह टुकड़े–करने के नारे लगाने की छूट मिले। राष्ट्रघाती है ऐसी विरोध की गतिविधियाँ और राजनीति। इन युवकों के व्यवहार से भी ज्यादा खतरनाक है उन राजनीतिक दलों और नेताओं का रवैया जो इनका समर्थन करने, अपनी राजनीति चमकाने का अवसर खोजते पहुंच जाते हैं। देश को तोड़ने का नारा लगाने वालों के साथ कोई कैसे खड़ा रह सकता है? अरविन्द केजरीवाल और राहुल गाँधी भी ऐसे अवसरों पर खड़े दिखे थे।

जे.एन.यू. की स्थापना 1970 के दशक में हुयी थी। 50 साल पूरे हो रहे हैं। अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर राष्ट्रविरोधी ताकतों का हिमायत करना जहां राजद्रोह हैं, वहीं अपने पैर कुल्हाड़ी मारना भी सिद्ध हो सकता है। गत वर्षों में देश के भीतर छिपे गद्दारों के साथ सख्ती न बरतने के कारण न जाने कितने आतंकी हमले हुये जिसमें लाखों करोड़ों की सम्पत्ति के साथ हजारों बेगुनाह नागरिक काल के गाल में समा गये। यह पौध अचानक तो ऊगी नहीं। खाद–पानी भी मिलता रहा है। प्रबुद्ध वर्ग के लिये यह आवश्यक है कि वह देश की राजनीति को दिशा दे। स्वतंत्र भारत में क्या अलगाव पैदा करने वाली विचारधारा का कोई स्थान हो सकता है?

अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर वाममार्गियों का तो राष्ट्रद्रोह का पुराना इतिहास है। स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही अंग्रेजों के साथ गलबहियाँ डाले रहना, विभाजन का समर्थन करना, सन् 1962 के चीनी आक्रमण को मुक्तिवाहिनी का अभियान निरूपित करना, कश्मीर की आजादी का समर्थन करने तक लाल बिग्रेड के कृत्य राष्ट्रद्रोह ही तो है। अब तो इनकी निराशा ही अभिव्यक्त हो रही है। आखिरी किला भी ढ़हने की कगार पर है। इनकी छटपटाहट समझने लायक है।

अनेक दिग्भ्रमित या राजनीति प्रेरित बुद्धिजीवियों का भारत के शत्रु उपयोग करते आ रहे हैं। इनके माध्यम से हमारी शिक्षा, विश्वविद्यालय और मीडिया प्रभावित भी होते रहे हैं। इस परिपेक्ष्य में उन सभी कारणों पर गम्भीर और समग्र चिन्तन की आवश्यकता है। ताकि देश और छात्रों का भविष्य उज्जवल और सुखमय हो सके। जे.एन.यू. में नारे लगाने वालों, कार्यकर्ताओं, प्राध्यापकों के कामों को भी जांच के दायरे में लाना चाहिये। क्योंकि सन् 2016 में भी जे.एन.यू. में आतंकी अफजल गुरू के निधन पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान भी अन्य नारों के अलावा ''आईन हिन्दुस्थान का मंजूर नहीं, मंजूर नहीं।'' जैसे नारे लगाये गये थे। परसियन भाषा में 'आईन' शब्द का अर्थ होता है–'संविधान'।

भारत विरोधी ताकतों द्वारा इस प्रकार विध्वंशक राजनीति का खेल किसी भी कीमत पर बन्द होना चाहिये जो देश की एकता संस्कृति और संविधान के लिये खतरा है।

विश्वविद्यालय तो शिक्षा, अध्ययन एवं शोध का केन्द्र होना चाहिये लेकिन दुर्भाग्य से जे.एन.यू. देशघाती ताकतों का केन्द्र बनकर रह गया है, जिनके कारण उसका मूल उद्देश्य ही समाप्त होने जा रहा है। शिक्षण संस्थाओं को राजनीति का अखाड़ा नहीं बनाया जाना चाहिये। छात्रों को राजनीति का मोहरा बनाया जाकर, घायल विद्यार्थियों और शिक्षकों की मदद के लिये जा रही एम्बुलेंस पर भी तोड़ फोड़ की गयी। यह कृत्य कितना शर्मनाक है?

जे.एन.यू. के शैशव काल से ही एक विशेष विचारधारा के लोग हावी रहे हैं। तब के संगठन से जुड़े एक छात्र ने कुलपति तक से मारपीट की थी। सन् 2005 में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को भी जे.एन.यू. में निशाना बनाया जा चुका है।

आमतौर पर यही धारणा बनी है कि पढ़ने–लिखने वालों को राजनीति से दूर ही रहना चाहिये लेकिन जब भी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का संदर्भ आता है, तब यह बात अटपटी लगने लगती है। इस विश्वविद्यालय के बारे में अब तक यह ठोस धारणा बन चुकी है कि जे.एन.यू. के छात्र होने का मतलब है नेता या देश का दुश्मन या टुकड़े–टुकड़े गेंग का सदस्य होना जो वामपंथियों के दत्तक हैं। जिस विश्वविद्यालय का एक अलग माहौल और छवि के लिये पहचान होना चाहिये थी, वैसा न होकर चिन्ता और चिन्तन का विषय बन चुका है।

देश भर में 49 केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं। इस विश्वविद्यालय में 8800 छात्र हैं। इस विश्वविद्यालय में लगभग 700 या 800 ऐसे छात्र हैं जो आन्दोलन, प्रदर्शन और देशविरोधी नारे लगाकर वातावरण को विषाक्त बनाते हैं। इस विश्वविद्यालय के लिये सरकार द्वारा लगभग 600 करोड़ से अधिक की राशि व्यय की जाती है। प्रत्येक छात्र पर लगभग आठ लाख रूपये खर्च होते हैं। जबकि जे.एन.यू. के छात्रों की

शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर

घुसपैठिये और शरणार्थी के अन्तर को समझें

शरणार्थी और घुसपैठियों में बुनियादी फर्क होता है। हर घुसपैठिया चाहे वह रोहिंग्या हो या बांग्लादेशी कट्टर इस्लामी सोच को लेकर भारत में आया है। इनसे देश की सुरक्षा को खतरा है। इस दिशा में लाया गया नागरिकता संशोधन कानून देश की एकता और अखण्डता अक्षुण्ण बनाये रखने की दिशा में सख्त और अनिवार्य कदम है। जो देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ बर्दास्त नहीं करना चाहते, वे खुले आम इस कानून का समर्थन करते हैं।

इसमें दो राय नहीं हो सकती कि इस देश के मुस्लिमों की आबादी कुछ पीढ़ियों पहले हिन्दू ही थी। लेकिन इस परिवर्तित मुस्लिम अधिसंख्या ने कट्टरवादियों के बहकावे में आकर हिन्दू आबादी से एक अलग देश पाकिस्तान की अवधारणा को जन्म दिया। यह गम्भीर और चिन्तन का विषय होना चाहिये।

इसके पूर्व मुस्लिम लीग ने कांग्रेस के कमजोर अदूरदर्शी व सत्तालोलुप नेताओं को देश का विभाजन कर देने को विवश कर दिया था। क्योंकि मुस्लिम लीग की कट्टरता के फलस्वरूप 'डायरेक्ट एक्शन' प्लान के अंतर्गत देश भर में भीषण हिंसक घटनायें हो रही थी। 25 लाख निर्दोष व्यक्तियों की हत्यायें हुयी थी, लाखों महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया था। देश के विभाजन का यह दुष्परिणाम था। उस समय करोड़ों लोगों को त्रासदी झेलना पड़ी थी।

आज का पाकिस्तान नरक से भी बदतर देश बन गया है जहां हिन्दू आदि अल्पसंख्यक कट्टरवादियों और इस्लामी भेदभाव के कारण सुरक्षित नहीं है। वहां अल्पसंख्यकों की छोटी–छोटी बच्चियों का अपहरण, जबरन कन्वर्जन और निकाह आम बात है।

पश्चिम बंगाल और दिल्ली के ही जिन हिस्सों में बांग्लादेशी घुसपैठिये निवास कर रहे हैं, वहां अपराध तो बढ़े ही हैं, वहां अनेक प्रकार के आतंकी संगठन भी खड़े हो गये हैं जिसके कारण देश की सुरक्षा को बड़ा खतरा उत्पन्न हो गया है।

ये घुसपैठिये न केवल देश के लिए खतरा बनेंगे वरन् जिस पर मुस्लिम जनसंख्या के प्रश्न को लेकर पाकिस्तान बनाने पर जोर दिया गया था, वहीं आधार फिर खड़ा कर दिया जायेगा और फिर वैसा ही खून–खराबा की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति पैदा होगी।

यह तथाकथित पंथनिरपेक्षता का ढोंग देश के नागरिकों के लिये है, घुसपैठियों के लिये नहीं। इस दृष्टि से इस महत्वपूर्ण प्रश्न को नजर अंदाज कर देश की सुरक्षा और अखण्डता को खतरे में नहीं डाला जा सकता।

इसे भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि अब तक इन घुसपैठियों से दंगे, चोरी, डकैती, अपराध, गरीबी के साथ बम विस्फोट तथा जमात–उल–मुजाहिदीन, 'हूजी', इंडियन मुजाहिदीन, मुस्लिम यूनाईटेड फ्रंट ऑफ असम, हस्लामी लिबरेशन आर्मी ऑफ असम, मुस्लिम वांटियन फोर्स, मुस्लिम लिबरेशन आर्मी, मुस्लिम सिक्यूरिटी फोर्स, हरकत–उल–मुजाहिदीन, हरकत–उल–मुजाहिदीन जैसे सैंकड़ों आतंकी अस्तित्व में आ जाने के अलावा मिला क्या हैं?

आज कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल मुस्लिम घुसपैठियों को भी नागरिकता दिलाने के लिये जगह–जगह पर पथराव, आगजनी, दंगा–फसाद करवा रहे हैं। यही इनका इतिहास है। इन्हीं दलों ने और कांग्रेस ने इन घुसपैठियों को भारत में रहने की व्यवस्था करने में मदद की है। इन घुसपैठियों को भारतीय नागरिकता देने के काम में असम राज्य कांग्रेस की राष्ट्रविरोधी भूमिका उजागर हो चुकी है। घुसपैठियों को अपना वोट बैंक बनाने के लिये कांग्रेसियों ने इन्हें बड़ी संख्या में मतदाता पहचान पत्र एवं राशन कार्ड आदि तक उपलब्ध कराये हैं। कांग्रेस ने घुसपैठियों को संरक्षण देकर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा काम किया है।

आवश्यकता इस बात की है कि घुसपैठियों और शरणार्थियों के बीच के भेद को समझा जाय। मुस्लिम देशों में इस्लामिक कट्टरता के कारण पीड़ित शरणागत की रक्षा करना जहां हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है, वहीं बांग्लादेशी रोहिंग्या मुस्लिम घुसपैठियों को रोकना जो कि देश की सुरक्षा के लिये खतरा है, को रोकना भी हमारा दायित्व है। कट्टर मजहबी विरोध के नाम पर अराजकता फैलायी जाती है। ऐसे तमाम मजहबी उन्मादियों को आजादी के बाद से ही तुष्ट किया जाता रहा है। अब तक वह प्रक्रिया जारी है।

क्या हम गणतंत्र के लायक हैं?

गणतंत्र दिवस पर आज एक प्रश्न उभरकर सामने आता है कि हम लोग गणतंत्र के लायक हैं भी या नहीं। जो नेतागण मंत्री पद ग्रहण करने से पहले संविधान की शपथ लेते हैं वे ही बाद में संविधान के विरोध में बोलने लगते हैं। नागरिकता संशोधन अधिनियम के सम्बंध में अभी ऐसा ही हुआ। भारतीय संसद ने बिल पास करके 'सीएए' कानून बना दिया। कुछ मुख्यमंत्रियों, विधायकों ने घोषणा की है ''मैं सीएए को नहीं मानूंगी/नहीं मानूंगा।'' क्या ये लोग अपनी बोली हुई बात को लिखित रूप में देने की कृपा करेंगे। क्या यह संविधान की मर्यादा का उल्लंघन नहीं है?

यहां प्रश्न यह भी उठता है कि संविधान की शपथ लेकर उसे तोड़ने वाले ऐसे लोगों के खिलाफ चुनाव आयोग, न्यायालय या पार्लियामेंट ने कार्यवाहीं क्यों नहीं की। ऐसे लोगों के चुनाव लड़ने की पात्रता ही समाप्त क्यों नहीं कर देनी चाहिए?

संविधान की शपथ लेकर तोड़ने वाले इन लोगों के हाथों में न तो संविधान सुरक्षित है और न गणतंत्र।

ऐसे संविधान विरोधी लोगों के खिलाफ कौन कार्यवाही करेगा और कग।

गणतंत्र दिवस पर आपको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

दार्शनिक इमर्सन, कार्लाइल और गीता

अमेरिका में इमर्सन एक चर्च में पादरी था और उसने रविवार को चर्च में गीता पढ़ानी प्रारम्भ की। लोगों ने शिकायत की कि तुम्हें बाइबिल पढ़ाने को रखा गया है, तुम काफिरों की पुस्तक क्यों पढ़ा रहे हो? उसने कहा यदि तुम्हें सर्वभौमिक बाइबिल या यूनिवर्सल बाइबिल चाहिए तो वह भगवद्गीता है। यदि आपको क्रिश्चियन बाइबिल चाहिए तो यह पड़ी रहने दो। उसने चर्च की नौकरी त्याग दी, लेकिन भगवद्गीता को हृदय से लगाया और सारे संसार में भगवद्गीता का प्रचार शुरू किया। उस समय इंग्लैण्ड में एक बहुत बड़ा दार्शनिक हुआ था, उसका नाम था कार्लाइल। वह अंग्रेजी का बहुत बड़ा लेखक था। इंग्लैण्ड में कार्लाइल यूनिवर्सिटी है। एक बार इमर्सन कार्लाइल से मिलने गया, वहां कार्लाइल ने इमर्सन से कहा– 'मेरे मित्र! तुम डालरों के देश में आये हो। तुम मेरे लिए क्या उपहार लाये हो?' उसने कहा–'मुझे शर्मिंदा मत करो। सांस्कृतिक दृष्टि से हम दिवालिये हैं। हमारे पास अपना कुछ भी नहीं है। हमारी जाति यूरोप से गयी है, धर्म हमारा यहूदियों का दिया हुआ है, इजराइल से गया हुआ है। इसलिए अमेरिकन नाम से अपना कुछ है ही नहीं, जो आपको हम कुछ दे सकें और इतना कहते–कहते उसकी आंखों में आंसू आ गये। कार्लाइल बोला–'अरे यार! मैंने उपहार मांगा और तुम आंसू बहाने लगे।' ''तो तुमने मुझसे आज उपहार मांगा है तो आज मैं तुम्हें जीवन की सबसे बड़ी दौलत बांट

शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर

पृष्ठ क्रमांक 2 का शेष भाग

रहा हूँ, जिसे मैं किसी को नहीं दे सकता था। वह मेरे लिये पावनतम और पवित्रतम वस्तु थी, पर आज तुमने उपहार मांगा तो दे रहा हूं। उसने जेब से भगवद्गीता की पोथी निकाली। मेरे मित्र! गुरू थोरो प्रतिदिन प्रातः काल गीता के अमृत जल से स्नान करते थे, इस गीता का पाठ प्रतिदिन करते थे। गीता का पाठ करते हुए श्रद्धा के आंसुओं से पवित्र हुई गीता की पोथी मेरी जिन्दगी की सबसे बड़ी दौलत थी। यही गीता की पोथी आपको दे रहा हूं।'' कार्लाइल ने उसकी पीठ पर हाथ रखा और कहा–'मेरे मित्र! जैसे लगता है कि तुम मेरे मन की बात ताड़ गये हो। क्या तुम मुझे देने के लिए गीता लाये हो? मैं तुझे देने के लिए क्या लाया था? मैं भी तुझे देने के लिए भगवद्गीता ही लाया हूं और कार्लाइल ने भी अपनी अपनी जेब से भगवद्गीता निकाली और इमर्सन को दे दी। कार्लाइल इंग्लैण्ड का सबसे बड़ा दार्शनिक, और इमर्सन अमेरिका का सबसे बड़ा दार्शनिक, और ये परस्पर मिलते हैं, इंग्लैण्ड में मिलते हैं और परस्पर गीता भेंट करते हैं।'

यह घटना एक मैगजीन में छपी और वह मैगजीन मसूरी के एक युवक को, जो नया–नया एम. ए. पास करके व्याख्याता फिलासफी(दर्शन) के पद पर नियुक्त हुआ था, उसके हाथ में पड़ी। रातभर वह मैगजीन पढ़ता रहा। उसने पढ़ा इंग्लैण्ड का सबसे बड़ा दार्शनिक और अमेरिका का सबसे बड़ा दार्शनिक एक–दूसरे से इंग्लैण्ड में मिलने पर एक–दूसरे को भगवद्गीता भेंट करते हैं। तब हमें पाश्चात्य दर्शन से क्या लेना है? जब पश्चिम वाले भी गीता पर मुग्ध हैं तो उसने पाश्चात्य दर्शन की किताबों को ताक पर रख दिया और गीता के स्वाध्याय में लग गया। धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे....।

उस भगवद्गीता की कृपा से वह भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ा व्याख्याता और इस युग की दार्शनिक मनीषा का मणिमुकुट बना। वह युवक था डॉ. राधाकृष्णन। डॉ. राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति भी बने। उन राधाकृष्णन के जीवन में परिवर्तन करने वाली है यह भगवद्गीता; उनका गीता ने कितना महान् व्याख्याता बना दिया।

परहित सरिस धर्म नहि भाई

वर्तमान समय में जब प्रकृति, पर्यावरण से लेकर वातावरण तथा अंतःकरण भयावह रूप से प्रदूषित तथा विकृत नजर आते हैं; एक चुनौती के रूप में मानवता इंसान से यह प्रश्न–सा करती प्रतीत होती है कि क्या इन विषाक्त परिस्थितियों में धर्मपथ का अनुसरण कर पाना हमारे लिए सम्भव है अथवा नहीं? भारतीय परम्परा में आध्यात्मिक व्यक्तित्वों की एक लम्बी श्रृंखला रही है और उस श्रृंखला में हम अनेकों ऐसे जाज्वल्यमान नक्षत्रों, तारकों को वैश्विक आकाश में आलोकित व प्रकाशित करते देखते हैं; जिसका जीवन धर्मनिष्ठा की प्रतिमूर्ति था। उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व से निस्सृत होने वाला प्रकाश जिस पवित्रता का एहसास हमें कराता है, उसकी विवेचना मात्र शब्दों के माध्यम से सम्भव नहीं है। साथ ही प्रश्न यह भी उठता है कि क्या आज उन महान व्यक्तित्वों का जन्म ले पाना सम्भव है। या नहीं? यह प्रश्न और भी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है; क्योंकि हमारे होने के पीछे का उद्देश्य ही धर्म और धार्मिक आस्थाओं की प्रतिष्ठा करना है।

जब हम धार्मिक आस्थाओं की बात करते हैं तो जो प्रथम प्रश्न पूछना अनिवार्य हो जाता है वह यह कि जिसे हम धर्म कहते हैं, वो अंततः है क्या? ये जिज्ञासा इसलिए जरूरी है कि बहुत से लोग जिसे धर्म समझकर बैठ जाते हैं, वो धर्म कम और अंधविश्वास ज्यादा है। अंधविश्वास का अर्थ उन बातों को सत्य मानकर बैठ जाने से है, जिनके प्रति हमारा स्वयं का कुछ अनुभव नहीं। सत्य को देखने के लिए परिश्रम की, परिष्कार की, परिमार्जन की व्यवस्था बनानी पड़ती है; जबकि मानने मात्र के लिए कुछ करना नहीं पड़ता, इसलिए अनेक लोग धर्म के पथ पर चलने के बजाय उसे मानकर बैठ जाते हैं। सत्य इससे विपरीत है। धर्म के पथ पर चलने वाले को यदि श्रद्धा का पथ अपनाना हो तो उसे एक अज्ञात शक्ति के प्रति समर्पण की, श्रद्धा की नींव को तैयार करना पड़ता है।

सुनने में आसान लगने वाला यह पथ कतई आसान नहीं है। आसान होता तो नचिकेता को स्वयं को मृत्युदेव को समर्पित न करना होता, ध्रुव को कष्टसाध्य तपस्या के पथ को अंगीकार न करना होता, मीरा को जहर का प्याला न पीना होता, हरिश्चन्द्र को दुष्कर परीक्षा से न गुजरना होता और कबीर को पानी में डूबना न पड़ता। धर्म का पथ, ज्ञान का पथ, विवेक का पथ, वैराग्य का पथ, बोध का पथ, तपस्या का पथ, योग का पथ, अध्यात्म का पथ–सदा से कठिन रहे हैं और सदा कठिन रहने वाले हैं, इसलिए इस पथ पर चलने वाले कम और इसकी बातें करने वाले अधिक मिल जाते हैं।

धर्म के पथ पर चलने वालों की युगऋषि की वे पंक्तियाँ–यह राह नहीं है फूलों की, काँटे ही इस पर मिलते हैं ले करके दरद जमाने का बस हिम्मत वाले चलते हैं–इनको याद रखने की जरूरत है तो वहीं उन्हें यम के द्वारा कठोपनिषद् में कही गई वो पंक्तियाँ भी स्मरण रखने की आवश्यकता है, जिन्हें यम ने नचिकेता से कहा था –

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्या

दुर्गं पथस्तत् कवयो वदन्ति।

अर्थात् अध्यात्म का पथ छुरे की धार के समान दुर्गम है। इसीलिए इस पर चलने से पहले ऋषि भी चिन्तन करते हैं।

धर्म का पथ वस्तुतः स्वयं को मिटा देने का, स्वयं को एक महान उद्देश्य के लिए समर्पित कर देने का पथ है। इस पथ पर चलने वालों को सूली चढ़ना पड़ा है, पत्थर खाने पड़े हैं, निन्दा सहनी पड़ी है तथा स्वयं को मिटाना पड़ा है। जो स्वयं को मिटा देने को तैयार रहते हैं; वे ही धर्म का शिखर पाने के अधिकारी बन पाते हैं। दुर्भाग्य यह है कि आज लोग बिना कुछ करे, बिना तपे, बिना कष्ट उठाए–धर्म की विभूतियों को पाने का सपना देखते हैं। धर्म आडम्बर का नाम नहीं है, बल्कि धर्म की परिभाषाएं तो सीधी–सरल है। एक सच्चा व अच्छा इंसान बनने के अतिरिक्त और कुछ करने या और कुछ बनने की प्रेरणा धर्म नहीं देता है। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में बिना लाग लपेट के कह देते हैं–

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।

पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।

धर्म की व्याख्या जटिल बनाने का कार्य तो समाज ने स्वयं किया है अन्यथा धर्म की परिभाषा सबसे सरल है। एक बच्चे को भी पता है कि दूसरों को कष्ट देना अधर्म है, दूसरों की पीड़ा का निवारण करना धर्म है। दूसरों की पीड़ा का निवारण करना, उनको पतन के मार्ग से सन्मार्ग पर लाना दूसरे शब्दों में कहें तो पीड़ा व पतन का निवारण ही आज के युग में धर्म की परिभाषा है। दुःखी के दुःख को दूर कर देने के अलावा और भटके हुओं को राह दिखा देने के अलावा–धर्म की भला और क्या परिभाषा हो सकती है। जिसको भी करने से मानवता को पोषण मिलता हो वो ही धर्म है।

इस संदर्भ में प्रसिद्ध लेखक लियो टॉलस्टॉय का एक जीवन वृतांत अत्यंत प्रेरणाप्रद है। टॉलस्टॉय एक प्रसिद्ध

शेष भाग पृष्ठ क्र. 4 पर

पृष्ठ क्रमांक 3 का शेष भाग

फीस आदि शुल्क अन्य विश्वविद्यालयों की तुलना में बहुत कम है।

देश भर के अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपति सहित लगभग तीन सौ से अधिक बुद्धिजीवीयों ने वामपंथी संगठनों पर केम्पस में हिंसा फैलाने का आरोप लगाया है। पत्र में यह भी कहा गया है कि लेफ्टविंग एक्टिविस्ट्स की गतिविधियों के कारण शिक्षा परिसरों में अध्ययन–अध्यापक की पावन कार्य प्रभावित हो रहा है जिसके कारण विश्वविद्यालय परिसरों में माहौल निरन्तर दूषित बनता जा रहा है। इसका सबसे ज्यादा नुकसान गरीब छात्रों को झेलना पड़ रहा है। असल प्रश्न यह है कि अगर विश्वविद्यालय में ही अराजकता और हिंसा पल्लवित–पोषित होने लगेगी तो इनका मूल उद्देश्य ही कहीं खो जायेगा। राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को अंजाम देने वाले छात्रों को तो कोई भी स्वीकार बर्दास्त नहीं कर सकता। इन्हें बाहर का रास्ता दिखाना ही बेहतर होगा।

अध्ययन–अध्यापन में रूचि रखने वाले गैर राजनैतिक विचारधारा के छात्र और अध्यापकों का भी मानना है कि इस विश्वविद्यालय में यहां के शैक्षिक वातावरण को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया गया है। शिक्षा के माध्यम से राजनीति चलाई जा रही है। यह कृत्य वामपंथी विचारधारा से जुड़े छात्र और अध्यापकों द्वारा किया और कराया जा रहा है। और पूरी साजिश के साथ।

37 उपद्रवी छात्रों की पहचान का दावा – इसी बीच केरल सरकार के कम्युनिष्ट मुख्यमंत्री विजयन ने भी उपद्रव में शामिल छात्रा आई.सी. घोष से मुलाकात की और एक जुटता व्यक्त की। इसके साथ ही एक पुस्तक 'द देथ एंड लाईफ ऑफ सफदर हाशमी' भेंट की।

समझा जा सकता है कि वामपंथी किस तरह अराजकता को जन्म और विस्तार देने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह करते रहते हैं?

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय(जे.एन.यू.) परिसर में गत पांच जनवरी को हुयी हिंसा के दौरान बनाये गये एक वाट्सऐप समूह से दिल्ली पुलिस ने 37 ऐसे छात्रों की पहचान की है।

यह कैसी शिक्षा है और कैसे शिक्षा संस्थान? जहां उच्च से उच्चस्तर की उपाधि के बावजूद राजनीति में शालीनता खोयी जा रही है। गुंडागर्दी, गाली–गलौच, अश्लील शब्दावली, असंयमित बयान और हिंसा का पाठ सीखा जा रहा है। शब्दहिंसा तक तो बात ठीक है, लेकिन शारीरिक हिंसा भी हो रही है। नेताओं के बयान भी मर्यादा खोते जा रहे हैं।

गौरतलब है कि गत पांच जनवरी को जे.एन.यू. परिसर में घुसकर छात्रों पर हिंसक हमला किया गया था। सार्वजनिक सम्पत्ति में तोड़–फोड़ की गयी थी। इस घटना में कई लोग जिनमें शिक्षक भी आहत हुये थे। यह हमला आतंकवादी वामपंथी छात्रों की करतूत माना जा रहा है।

दीपिका का जे.एन.यू. जाना – कोई भी व्यक्ति अपने विचार व्यक्त कर सकने के लिये स्वतंत्र है। इस दृष्टि से अभिनेत्री दीपिका पादुकोंण ने जे.एन.यू. जाकर जो किया उस पर किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिये। लेकिन जब कोई सेलिब्रिटी देश–विरोधी नारे लगाने वालों के साथ खड़ी दिखती है, तब उसकी सोच पर प्रश्न खड़ा होना स्वाभाविक है। गत लम्बे अरसे से जे.एन.यू. टुकड़े–टुकड़े गेंग की गतिविधियों का केन्द्र रहा है, अब भी आन्दोलन के दौरान अफजल की फांसी के विरोध में नारे लगाये भी गये। जे.एन.यू. में छात्रों पर हुये हमले के बाद एक जुटता का प्रदर्शन करने दीपिका भी पहुंची थी लेकिन किसी प्रकार का सम्बोधन नहीं किया। यहां छात्रों में विवाद उस समय हुआ जब छात्रों के एक वर्ग द्वारा सेमेस्टर के लिये पंजीकरण कराने से छात्रों को रोका गया। यह शिक्षा–विरोधी कार्य है। जो छात्र पढ़ना चाहते हैं,उन्हें क्यों रोका जाना चाहिये। इन अवरोध उत्पन्न करने वाले छात्रों ने जे.एन.यू. के सर्वर रूप में भी तोड़–फोड़ की थी।

कोटा में 104 बच्चों की मौत

राजस्थान के कोटा में एक सरकारी अस्पताल में एक महीने के अंतराल में सौ से अधिक बच्चों की मौत हृदय को दहला देने वाली खबर है। इस 21वीं सदी में प्रशासन की चूक से ऐसा हुआ। यह प्रशासन और शासनकर्ताओं के लिये कलंक है। इस दुःखद घटना पर कांग्रेसी शासन द्वारा क्षोम व्यक्त करना भी आवश्यक नहीं समझा गया। कम से कम बच्चों की असमय मौत के लिये स्वयं को दोषी क्यों नहीं माना जाना चाहिये। कांग्रेस अपने आप को धिक्कारने का भी तो साहस रखे।

पृष्ठ क्रमांक 3 का शेष भाग

लेखक होने के साथ–साथ संवेदनशील व्यक्ति भी थे। इसीलिए उनके घर के द्वार के बाहर अनेक याचकों की भीड़ रोज लग जाया करती थी। एक बार वे अपने घर से बाहर निकले तो अनेक याचक उनके आगे–पीछे चलने लगे। उनकी आदत थी कि वे किसी को निराश नहीं करते थे।

इसी कारण उन्होंने हर याचक को कुछ–न–कुछ देना शुरू किया। किसी को उन्होंने पैसे दिए तो किसी को उन्होंने अपने कपड़े, अपना स्वेटर उतारकर दे दिया। बहुत शीघ्र ऐसी स्थिति आ गई कि उनके पास देने को कुछ न बचा। याचकों की पंक्ति में सबसे पीछे की ओर एक व्यक्ति बैसाखियां लेकर खड़ा था। वह तेजी से सामने न आ सका और सबसे बाद में उनके पास पहुंचा।

अब तक टॉलस्टॉय खाली हो चुके थे। उन्होंने उस व्यक्ति को गले लगाया और दुःखी स्वर में बोले–''भाई! अब देने को कुछ बचा नहीं है। कल आऊँगा।'' उनकी बात सुनकर वह व्यक्ति बोला–''आप ऐसा न बोलें। आज आपने जो दिया, वो, आज तक किसी ने नहीं दिया। धन देने वाले तो अनेकों मिले, पर प्यार देने वाला आज तक नहीं मिला था। वह प्रेम, संवेदना आप ही ने दी है।''

ये बातें आज अत्यंत सामयिक हो जाती हैं; क्योंकि धर्म की परिभाषा अविचल है, अटल है, शाश्वत है–वह है मनुष्य की संवेदना का जागरण। आज धर्म के इसी स्वरूप की स्थापना का आवाहन प्रज्ञापुत्रों से आज का समय करता है। आज इंसान बाहर से इतना छोटा नहीं हुआ, जितना मन से हो गया है। आज आदमी खुद के सुख से ज्यादा दूसरे के दुःख के लिए लालायित है। ऐसे में धर्म का पथ ही मानवता का पथ हो सकता है। इस पथ पर हम स्वयं चलें व अनेकों को चला सकें, यह आवाहन आज का युग हम जाग्रत आत्माओं से करता नजर आता है।

सूचना

कृपया आप अपना सुझाव महाकोशल संदेश के ई–मेल व्हाट्सअप नं. 9713223539 पर भेजें।

– **सम्पादक**

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा-
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com